सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नाज़िʿआत

खींच निकालने वाले

पूरा सफ़र — फ़रिश्ते, सरकश, और काँपते दिल —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 79 • 46 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वन्-नाज़ि'आति ग़र्क़ा
1. क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो सख़्ती से खींच निकालते हैं।

कुलूबुंय्-यौम-इज़िंव्-वाजिफ़ह
8. उस दिन कुछ दिल काँप रहे होंगे।

फ़-क़ुल हल लक इला अन तज़क्का
18. तो उसे कहो: क्या तू पाक होना चाहता है?

अ-अन्तुम अशद्दु ख़ल्क़न अमिस्-समा
27. क्या तुम्हें बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान को?

व अम्मा मन ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही व नहन्-नफ़्स 'अनिल्-हवा
40. और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका।

इन्नमा अन्त मुन्ज़िरु मंय्-यख़्शाहा
45. आप तो बस डराने वाले हैं उस को जो इससे डरता है।

मौत के लम्हे पर पाँच क़समें

बेटा, यह सूरह पाँच क़समों से शुरू होती है, और ज़्यादातर मुफ़स्सिरीन इन्हें मौत के फ़रिश्तों के काम का बयान बताते हैं — जो इसे क़ुरआन की सबसे संजीदा शुरुआतों में से एक बना देता है।

'वन्-नाज़ि'आति ग़र्क़ा — क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो सख़्ती से, गहराई तक धँस कर खींच निकालते हैं' — गुनहगार की रूह को उसके जिस्म के सबसे गहरे हिस्सों से सख़्ती से, ना-चाहते हुए खींचते हुए।

'वन्-नाशितati नश्ता — और उन की जो नरमी से निकाल लेते हैं' — मोमिन की रूह, उस तरह छोड़ा हुआ जैसे कोई गाँठ नरमी से खोल दी जाए, जैसे मशकीज़े के मुँह से पानी की बूँद फिसल जाए।

बेटा, इन दो आयतों में रखा हुआ तज़ाद महसूस कीजिए, एक के बाद एक। वही

वाक़िआ — मौत — दो बिल्कुल मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से आती है, और ये फ़र्क़ उस लम्हे तय नहीं होता; ये एक पूरी उम्र से तय होता है। नबी ﷺ ने बताया कि मोमिन की रूह ख़ुश-आमदीद के अल्फ़ाज़ के साथ ऊपर बुलाई जाती है, और बदकार की रूह बिखरती और चिपकती है और घसीटी जाती है। हर एक मौत चखेगा, बेटा — मगर सब एक जैसी मौत नहीं चखेंगे।

'वस्-साबिहाति सब्हा — और उन की जो तैरते हुए चलते हैं' — फ़रिश्ते आसमानों में यूँ हरकत करते हुए जैसे तैरने वाले पानी में; 'फ़स्-साबिक़ाति सब्क़ा — फिर वो जो आगे बढ़ते, एक दूसरे से सबक़त ले जाते हैं'; 'फ़ल्-मुदब्बिराति अम्रा — फिर वो जो मामले का इंतिज़ाम करते हैं'।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि ये शुरूआत एक दलील पेश करने से पहले क्या क़ाइम कर देती है: एक पूरा ग़ैर-मरई अमला हमारे गिर्द मुसलसल, फ़रमाँबरदार हरकत में है — खींचते, छोड़ते, तैरते, दौड़ते, इंतिज़ाम करते — जब कि हम इधर-उधर घूमते हुए अपने आप को अपने शेड्यूल का मालिक समझते रहते हैं।

वो दिल जो काँपते हैं

फिर सूरह उस दिन का नाम लेती है: 'यौम तर्जुफ़ुर्-राजिफ़ह — उस दिन जब हिलाने वाली (चिंघाड़) हिला देगी — तत्ब'उहर्-रादिफ़ह — उसके पीछे आने वाली आएगी।' दो फूँकें, बेटा — पहली जो हर चीज़ तबाह कर दे, दूसरी जो हर चीज़ उठाए।

और फिर उस दिन इंसानों का बयान, अरबी के सिर्फ़ सात लफ़्ज़ों में: 'क़ुलूबुंय्-यौम-इज़िंव्-वाजिफ़ह — उस दिन कुछ दिल काँप रहे होंगे — अब्साऊहा ख़ाशि'अह — उनकी आँखें झुकी, नीचे हुईं।'

बेटा, क़ुरआन उनके कपड़े, उनका रुतबा, या उनका माहौल बयान नहीं करता। वो सीधा उन दो चीज़ों पर जाता है जो झूट नहीं बोल सकतीं: दिल की धड़कन और आँखें। दिल ख़ौफ़ से धड़कता हुआ, आँखें नीचे, ऊपर देखने से क़ासिर। तारीख़ की हर मुतकब्बिर नज़र — वो बॉस जिसने कभी अपने मज़दूरों की तरफ़ नहीं देखा, वो ज़ालिम जो लोगों को घूर कर ख़ामोश कर देता था — नीचे झुकी हुई।

और वही लोग इस दुनिया में क्या कह रहे थे? 'यक़ूलून अ-इन्ना ल-मर्दूदून फ़िल्-हाफ़िरह — वो कहते हैं: क्या हम वाक़ई अपनी पहली हालत में लौटाए जाएँगे — अ-इज़ा कुन्ना 'इज़ामन नख़िरह — जब हम गली-सड़ी हड्डियाँ बन चुके होंगे?'

और अल्लाह का जवाब हैरत-अंगेज़ तरीक़े से मुख़्तसर है: 'फ़-इन्नमा हिय ज़ज्रतुंव्-वाहिदह — तो वो बस एक चिंघाड़ होगी — फ़-इज़ा हुम बिस्-साहिरह — और फ़ौरन वो मैदान में खड़े होंगे।'

बेटा, उन्होंने दोबारा ज़िंदा होने को कोई वसीअ, पेचीदा ना-मुमकिन चीज़ समझा था। अल्लाह फ़रमाते हैं: एक चिंघाड़। बस इतना ही। जिसे वो अल्लाह के लिए बहुत मुश्किल समझ रहे थे, वो उस से भी कम मेहनत माँगता है जो आप एक सोते हुए बच्चे को जगाने में करते हैं।

फ़िरऔन के पास जाओ

और अब सूरह एक कहानी की तरफ़ मुड़ती है — और नबी ﷺ से नरमी से पूछती है: 'हल अताक हदीसु मूसा — क्या आप तक मूसा की ख़बर पहुँची?'

बेटा, ये कहानी यहाँ एक वजह से रखी गई: मक्का के मज़ाक़ उड़ाने वाले ठीक फ़िरऔन की तरह पेश आ रहे थे, तो अल्लाह उन्हें उस आख़िरी शख़्स का अंजाम दिखाते हैं जिसने इस तरह किया था।

'इज़ नादाहु रब्बुहू बिल्-वादिल्-मुक़द्दसि तुवा — जब उनके रब ने उन्हें मुक़द्दस वादी तुवा में पुकारा: इज़्हब इला फ़िर'औन इन्नहू तग़ा — फ़िरऔन के पास जाओ; बेशक वो हद से बढ़ गया है।'

और फिर, बेटा, एक ऐसी आयत आती है जो हर उस शख़्स के दिल में छप जानी चाहिए जो कभी किसी दूसरे इंसान की इस्लाह की कोशिश करता है: 'फ़-क़ुल हल लक इला अन तज़क्का — और उसे कहो: क्या तू पाक होना (चाहता) है? — व अह्दियक इला रब्बिक फ़-तख़्शा — और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह दिखाऊँ, ताकि तू उससे डरे?'

इसे देखिए। फ़िरऔन इंसानी तारीख़ का सबसे बुरा ज़ालिम था — एक ऐसा शख़्स

जिसने एक क़ौम को ग़ुलाम बनाया, नौमौलूद क़त्ल किए, और ख़ुदाई का दावा किया। और अल्लाह अपने नबी को हुक्म देते हैं कि उस तक एक सवाल ले कर जाएँ, नरमी से, एक दावत की तरह: क्या तू पाक होना चाहेगा?

बेटा, अगर फ़िरऔन को इस तरह मुख़ातिब किया जाना था, तो फिर हमारे पास क्या उज़्र है उस सख़्ती का जिससे हम अपने बच्चों, अपने मियाँ-बीवी, अपने जूनियर, और अपने उन भाइयों की इस्लाह करते हैं जो फिसल गए? नरमी दावह में कमज़ोरी नहीं है; ये वो तरीक़ा है जो ख़ुद अल्लाह ने तारीख़ के सबसे सख़्त केस के लिए तजवीज़ किया।

'फ़-अराहुल्-आयतल्-कुब्रा — तो उसने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फ़-कज़्ज़ब व 'असा — मगर उसने झुठलाया और ना-फ़रमानी की। सुम्म अद्बर यस्'आ — फिर वो पीठ फेर कर (उसके ख़िलाफ़) दौड़ता हुआ चला। फ़-हशर फ़-नादा — और उसने (अपनी क़ौम को) जमा किया और पुकारा — फ़-क़ाल अना रब्बुकुमुल्-आ'ला — और कहा: मैं तुम्हारा सबसे बुलंद रब हूँ!'

'फ़-अख़ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्-ऊला — तो अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया दोनों के अज़ाब में पकड़ लिया। इन्न फ़ी ज़ालिक ल-'इब्रतल्-लि-मंय्-यख़्शा — बेशक इसमें एक सबक़ है उस के लिए जो डरता है।'

बेटा, आख़िरी जुमला देखिए: सबक़ उस के लिए जो डरता है। वही तारीख़ सब के लिए मौजूद है; मगर सिर्फ़ वही दिल इससे सीखता है जिसमें कुछ ख़ौफ़ हो।

तुम्हें बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान को?

फिर सूरह दोबारा ज़िंदा होने के मुनकिरों की तरफ़ मुड़ती है, ख़ालिस मंतिक़ के एक चैलेंज के साथ: 'अ-अन्तुम अशद्दु ख़ल्क़न अमिस्-समा — क्या तुम्हें बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान को? बनाहा — उसने उसे बनाया। रफ़'अ सम्कहा फ़-सव्वाहा — उसकी छत बुलंद की और उसे ठीक किया। व अग़तश लैलहा व अख़रज ज़ुहाहा — और उसकी रात को अँधेरा किया और उसकी सुबह की रौशनी निकाली।'

बेटा, दलील अपनी सादगी में तबाह कुन है: ऊपर देखिए। वो अज़ीम ता'मीर जो आपके ऊपर है — कहकशाएँ, अंदाज़े से परे फ़ासले, रात और दिन का एक निज़ाम जो लाखों साल से बग़ैर किसी इंजीनियर के चल रहा है — अल्लाह ने बनाया। और आप, चंद किलो की एक मख़लूक़ जो एक पलंग में समा जाए, ये समझते हैं कि आपको दोबारा बनाना उन के लिए मुश्किल है?

'वल्-अर्ज़ ब'अद ज़ालिक दहाहा — और ज़मीन को, उसके बाद, फैला दिया — अख़्रज मिन्हा मा-अहा व मर्'आहा — उसमें से उसका पानी और उसकी चारागाह निकाली — वल्-जिबाल अर्साहा — और पहाड़ों को गाड़ दिया।' और फिर मक़सद: 'मता'अल्-लकुम व लि-अन'आमिकुम — तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए।'

बेटा, उस आख़िरी लाइन की रहमत देखिए: चारागाह सिर्फ़ इंसानों के लिए नहीं बनाई गई। अल्लाह जानवरों के खाने का ज़िक्र हमारे खाने के साथ करते हैं। ये कायनात एक ऐसा घर है जिसमें हर मख़लूक़ को एक प्लेट दी गई है।

फ़ैसले के दो जुमले

फिर: 'फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल्-कुब्रा — तो जब सबसे बड़ी आफ़त आएगी — यौम यतज़क्करुल्-इंसानु मा स'आ — उस दिन इंसान को याद आएगा जो उसने कमाया — व बुर्रिज़तिल्-जहीमु लि-मंय्-यरा — और जहन्नम उस के लिए सामने लाया जाएगा जो देखता है।'

बेटा, 'उस दिन इंसान को याद आएगा जो उसने कमाया' — उस दिन, याद पूरी सफ़ाई के साथ लौट आएगी। जो हर घंटा हम अभी ख़र्च कर के भूल जाते हैं, वो दोबारा चलाया जाएगा, और हम आख़िर-कार देख लेंगे कि उन सालों हम असल में किस चीज़ के लिए काम कर रहे थे।

और फिर अल्लाह पूरी इंसानियत को दो छोटे बयानात से बाँट देते हैं — बेटा, यही इस सूरह का दिल है:

'फ़-अम्मा मन तग़ा — रहा वो जिसने हद से बढ़ कर सरकशी की — व आसरल्-

हयातद्-दुन्या — और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी — फ़-इन्नल्-जहीम हियल्-म'वा — तो बेशक जहन्नम उसका ठिकाना होगा।'

'व अम्मा मन ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही — और रहा वो जिसने अपने रब के सामने खड़े होने से डर — व नहन्-नफ़्स 'अनिल्-हवा — और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका — फ़-इन्नल्-जन्नत हियल्-म'वा — तो बेशक जन्नत उसका ठिकाना होगी।'

बेटा, देखिए दूसरे शख़्स का कितनी ठीक बयान हुआ — ये एक बची हुई ज़िंदगी का मुकम्मल नुस्ख़ा है, दो जुमलों में। पहला: 'ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिह' — उसने अपने रब के सामने खड़े होने से डर। ग़ुरबत का ख़ौफ़ नहीं, लोगों की राय का ख़ौफ़ नहीं — एक लम्हे का ख़ौफ़: अल्लाह के सामने खड़ा होना। दूसरा: 'नहन्-नफ़्स 'अनिल-हवा' — उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका। ग़ौर कीजिए, बेटा: ये नहीं कहता कि उसके अंदर कोई ख़्वाहिश थी ही नहीं। ये कहता है कि उसने उन्हें रोक लिया। ख़ुद ये जद्दो-जहद ही क़ाबिलियत है।

यही पूरा दीन एक जुमले में है: एक दिल जो उस खड़े होने को याद रखे, और एक हाथ जो नफ़्स को उस चीज़ से रोके रखे जिसकी वो तलब करता है। और दोनों मंज़िलों के लिए जो ख़ूबसूरत लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ उसे देखिए: 'म'वा' — ठिकाना, पनाह, वो जगह जहाँ आप आख़िर-कार घर आते हैं। दोनों आदमी पनाह ढूँढ रहे हैं; हर एक को वही मिलता है जो उसने ख़ुद बनाया।

सिर्फ़ एक डराने वाले

सूरह उस सवाल पर ख़त्म होती है जो मज़ाक़ उड़ाने वाले बार बार फेंकते थे: 'यस्अलूनक 'अनिस्-सा'अति अय्यान मुर्साहा — वो आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं: उसका आना कब है?'

और अल्लाह का जवाब हर ख़ुद-साख़्ता ग़ैब-दान को उसकी जगह दिखा देता है: 'फ़ीम अन्त मिन ज़िक्राहा — आप किस मुक़ाम में हैं कि उसका ज़िक्र करें? इला रब्बिक मुन्तहाहा — आपके रब तक ही उसकी इंतिहा है।'

बेटा, ख़ुद अल्लाह के रसूल ﷺ से कहा जाता है: ये इल्म आपके देने की चीज़ नहीं। तो जब आज कोई शख़्स तारीख़ें, मुस्तक़बिल और पोशीदा चीज़ों के इल्म का दावा करे, तो आप जवाब पहले से जानते हैं।

'इन्नमा अन्त मुन्ज़िरु मंय्-यख़्शाहा — आप तो बस उस के लिए डराने वाले हैं जो इससे डरता है।' बेटा, तंबीह सब के लिए मौजूद है, मगर वो सिर्फ़ उस दिल में उतरती है जिसमें ख़ौफ़ की गुंजाइश हो।

और आख़िरी आयत, ख़ूबसूरत और ख़ामोशी से हिला देने वाली: 'क-अन्नहुम यौम यरौनहा लम यल्बसू इल्ला 'अशिय्यतन औ ज़ुहाहा — जिस दिन वो उसे देखेंगे, उन्हें ऐसा लगेगा जैसे वो (दुनिया में) एक शाम या उसकी सुबह से ज़्यादा नहीं ठहरे।'

बेटा, आपकी पूरी ज़िंदगी ख़त्म होने पर यूँ महसूस होगी: एक शाम, या एक सुबह। सत्तर साल, अस्सी साल — स्कूल, करियर, शादी, औलाद, रिटायरमेंट — एक ही दोपहर के एहसास में सिमट कर रह जाएगा। जो भी आपने 'बाद के लिए' टाला था, वो सब उसी एक छोटी दोपहर का था।

तो वो सूरह जो फ़रिश्तों के जिस्मों से रूहें खींचने से शुरू हुई थी, ये बता कर ख़त्म होती है कि ये पूरी ज़ियारत कितनी मुख़्तसर थी। जिए, बेटा, उस शख़्स की तरह जो जानता है कि ये एक दोपहर है — और जो चाहता है कि जब शाम आए तो वो सही 'म'वा' के साये में हो।

इस सूरह से क्या सीखा

1. मौत दो तरह आती है — घसीट कर निकाली गई या नरमी से खींची गई — और कौन सी, ये एक पूरी उम्र तय करती है, आख़िरी लम्हा नहीं।

2. फ़रिश्तों का एक ग़ैर-मरई अमला हमारे गिर्द मुसलसल फ़रमाँबरदार हरकत में है; हम उतने इख़्तियार में नहीं जितना समझते हैं।

3. दोबारा ज़िंदा करना अल्लाह को एक चिंघाड़ का ख़र्च देता है — उनकी क़ुदरत को कभी अपने तसव्वुर से मत नापिए।

4. लोगों की इस्लाह वैसे कीजिए जैसे अल्लाह ने मूसा को फ़िरऔन के सामने कहा: एक नरम सवाल के साथ — 'क्या तू पाक होना चाहता है?'

5. शक करने से पहले ऊपर देखिए: जिसने आसमान बनाया और ठीक किया, उसे आपको दोबारा बनाना मुश्किल न होगा।

6. नजात का नुस्ख़ा याद कर लीजिए: अपने रब के सामने खड़े होने से डरिए, और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोकिए — जद्दो-जहद ख़ुद ही क़ाबिलियत है।

7. आपकी पूरी ज़िंदगी एक शाम या एक सुबह जैसी लगेगी — जो कुछ 'बाद' के लिए टाल रहे हैं, उसे टालना बंद कीजिए।

या अल्लाह, हमारी रूहों को उन में बना दीजिए जो नरमी से खींची जाएँ, हमें अपने सामने खड़े होने का ख़ौफ़ और ख़्वाहिश रोकने की ताक़त अता फ़रमाइए, और जन्नत को हमारा म'वा बना दीजिए। आमीन।